IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताओं में दलित चेतना

(OMPRAKASH VALMIKI KI KAVITAON MEIN DALIT CHETNA)

शोधार्थी

रवीन्द्र कुमार

हिन्दी विभाग

रा0स्ना0 महा0 सोमेश्वर (अल्मोड़ा)

सारांश-

हिन्दी दलित कविता की विकास-यात्रा में ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताओं का एक विशिष्ट स्थान है। दलित कवि का मानवीय दृष्टिकोण ही दलित कविता का सामाजिकता से जोड़ता है। वाल्मीकि जी ने अपनी दलित कविताओं में मानवीय पक्ष को प्रभावशाली ढ़ग से जोड़ा है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताओं में समाज की विसंगतिपूर्ण स्थिति का बहुत ही सही ढ़ग से चित्रण हुआ है। इनकी कविताएं सामाजिक परिवर्तन की मांग करती है। जो दलित मूक्ति के सवालों पर पूर्ण रूप से अम्बेडकरवादी है। सामाजिक क्षेत्र सें उनका पूर्ण रूप से सारोकार है। दलितों के साथ सवर्णो की स्थिति बहुत ही खराब रही है। दलित महिलाओं की स्थिति समाज में दोहरे शोषण की रही है। जिसे घर और बाहर दोनों स्थितियों में परेशानी उठानी पड़ती है। अन्याय और तिरस्कार सहकर भी उन को अपमान सहना पड़ता है। इसलिए इन दलितों के यथार्थ जीवन को व्यक्त करने वाली भाषा का प्रयोग किया गया है। जो उनके मध्य बोले जाने वाली भाषा होती है। दलितों ने जो जीवन जीया है उस परिवेश की भाषा को कवि ने स्वीकार किया है।

मूलशब्द -

उपेक्षित, शोषित, जाति-व्यवस्था, वर्ण-व्यवस्था, अंबेडकरवाद, दरिद्रता, सामन्तवादी व्यवस्था, उत्पीड़न, रूढ़िवादी आदि।

भारत में दलित क्रान्ति का जन्म सवर्णों द्वारा समाज में दलितों के विरोध के फलस्वरूप उत्पन्न हुआ है। सवर्णों द्वारा किये जाने वाले विरोध का स्वरूप प्राचीन काल से भारत में प्रचलित वर्ण व्यवस्था है। इसी वर्ण व्यवस्था से ही दलित दृष्टिकोण का निर्माण हुआ। दलित दृष्टिकोण सदियों से चली आ रही मनुवादी व्यवस्था के विरोध का परिणाम है।

मनुवादी विरोध का अभिप्राय समाज में व्याप्त वर्ण और जाति व्यवस्था का विरोध करना और उसके स्थान पर एक समान समाज को स्थापित करना है । दलित साहित्य के सम्पूर्ण परिचय से पहले 'दलित ' शब्द का अर्थ, स्वरूप एवं उसके विकास की चर्चा करनी जरूरी हो जाती है ।

भारतीय हिन्दू समाज में शोषित-उत्पीड़ित, दबी-कुचली, नीच, सामाजिक व्यवस्था से अलग, जिसका दलन किया गया हो उसे 'दलित' कहा जाता है। दलित शब्द का प्रयोग सौ वर्ष से ज्यादा समय से होता आ रहा है । इसको कई अन्य नामों से भी संबोधित किया जाता रहा है, जैसे- शूद्र, अवर्ण, अस्पृश्य, पंचमवर्ण, हरिजन, बहुजन आदि । शूद्र और अस्पृश्य शब्द प्रताड़ना के प्रतीक के रूप में जाने जाते है । 'दलित' शब्द निम्न जातियों के विकास और सशक्तिकरण के रूप में अपनी पहचान बनाने में सफल रहा है । निम्न वर्ग के लोगों द्वारा दलित शब्द को अपने लिए स्वीकार कर लिया है, जो अब दलित के रूप में जाने जाते है ।

हिन्दी दलित कविता का मूल स्वर समाज में प्रचलित वर्ण-व्यवस्था है । जिसका तेवर दलित कविता की चेतना की गहराइयों से जुड़ा हुआ है । जिसका मूल कारण सदियों से दलितों पर हो रहें शोषण और अत्याचार भी है । यह सदियों की यातनाऐं हैं जो अब फूट रहीं है । आज दलित साहित्य में लेखन प्रचुर मात्रा में हो रहा है । दलित कवियों ने अपनी कविता में सदियों से परम्परागत रूप से चली आ रही वर्ण-व्यवस्था, जाति-व्यवस्था, हिन्दुओं के धार्मिक कर्मकाण्ड, दलितों और सवर्णों के बीच की असमानता के प्रति दलित आक्रोश को व्यक्त करता है । आम आदमी की समस्याओं को लेकर दलित वर्ग न बहुत कम लेख लिखें परन्तु अब प्रचुर मात्राओं में दलितों की समस्याओं की अभिव्यक्ति कवि काव्य पाठ से कर रहें है । और व्यवस्था परिवर्तन हेतु कवि संघर्षरत है । दलित कविता की खास बात यह है कि वो किसी छंद , विधान, रस, अलंकार आदि किसी का भी आग्रह नहीं करती । स्वाभाविक रूप से उसके अन्तर्गत जो भी आता है उसे सहज स्वीकार कर लेती है । आधुनिक युगीन हिन्दी दलित कविता का आरंभ हीरा डोम की कविता 'अछूत की शिकायत' से माना जाता है । यह कविता 1914 ई0 में सरस्वती नामक हिन्दी पत्रिका में प्रकाशित हुई थी । इस कविता में कवि ने दलित समाज की जीवन की व्यथा शोषण और अन्याय का चित्रण करते हुए भगवान से प्रश्न किया कि ये सारा दुःख हमें ही क्यों ? आधुनिक दलित साहित्य में चेतना का स्वर दलित मराठी साहित्य से उठा है । उसका प्रभाव हिन्दी की सभी विधाओं पर पड़ा है । आधुनिक दलित कविता का तेवर उत्तेजनापूर्ण दिखाई देता है ।

अभिनव हिन्दी कोश के अनुसार-''दलित शब्द का अर्थ- दला गया, मसला रौंदा, कुचला गया । सदियों से अधिकारहीन, निर्बल, उपेक्षित, शोषित, और मूक रहता आया जाति व्यवस्था का शिकार (व्यक्ति,वर्ग अथवा समाज) जिसके उद्धार के लिए अब कई उपाय किये जा रहे है , उसे दलित कहा गया है ।''[1]

सुशीला टाकभौरें के अनुसार-''दलित साहित्य लेखन,दलित आन्दोलन का एक माध्यम है ।''[2]

जयप्रकाश कर्दम के अनुसार-''दलित साहित्य अंबेडकरवाद से प्ररित और प्रभावित है,क्योंकि बौद्व धर्म से प्रभावित अंबेडकरवाद का आधार समानता, स्वतंत्रता और सद्भाव है ।''[3]

रजतरानी 'मिनू' के अनुसार- ''दलित साहित्य तर्क पर आधारित साहित्य है, और मूल में यह सामाजिक, आर्थिक, और शैक्षिक न्याय की बात करता है । ...अपने उद्देश्य में दलित साहित्य दलित मुक्तिकामी विचारधारा का साहित्य है ।''[4]

मोहनदास नैमिशराय के अनुसार-''दलित साहित्य परम्परागत कलात्मकता से इतर अनगढ़ व अटपटे शब्दों में सामाजिक अन्याय के विरूद्व आक्रोश, सामाजिक परिवर्तन के लिए आवाहन और उत्पीड़न व शोषण के विरूद्व का साहित्य है ।''[5]

डॉ धर्मवीर के अनुसार- ''दलित साहित्य वो है जो दलित लेखक लिखता है।''[6]

कंवल भारती के अनुसार- ''दलित साहित्य सामाजिक परिवर्तन और आर्थिक मुक्ति के सवालों का साहित्य है । इन सवालों से जुड़े दलित लेखकों का लेखन ही दलित साहित्य की श्रेणी में आता है । इससे इतर कुछ भी लिखा गया दलित साहित्य नहीं है ।''[7]

डॉ0 एन सिंह के अनुसार- '' दलित साहित्य का अर्थ है, वह साहित्य जो दलितों के द्वारा और दलितों के उद्बोधन हेतु लिखा गया हो ।''[8]

ओम प्रकाश वाल्मीकि के अनुसार-''दलित शब्द साहित्य के साथ जुड़कर एक ऐसी साहित्यिक धारा की ओर संकेत करता है जो मानवीय सरोकारों और संवेदनाओं की यर्थाथवादी अभिव्यक्ति है ।''[9]

शरण कुमार लिंबाले के अनुसार- ''दलितों का दुःख, परेशानी, गुलामी, अधःपतन और उपहास के साथ ही दरिद्रता का कलात्मक शैली से चित्रण करने वाल साहित्य ही दलित साहित्य है ।''[10]

हरिनारायण ठाकूर के अनुसार- ''दलित साहित्य न केवल दलित दुदर्शा का दस्तावेज है ,बल्कि यह पारम्परिक समाज-व्यवस्था के द्वारा प्रतिकार द्वारा मुक्ति का प्रयत्न भी है । यह वर्ग से अधिक वर्ण की बात करता है, जिसके वह घेरे में है ।''[11]

आधुनिक दलित कविता का तेवर उत्तेजनापूर्ण दिखाई देते है । ओम प्रकाश वाल्मीकि ने अनादिकाल से यातना भोगते समाज को देखकर तिलमिला उठते है । वे अपनी कविता 'ठाकुर का कुआं' में सामन्तवादी व्यवस्था पर कुठरघात करते हुए कहते है कि-

''चूल्हा मिट्टी का

मिट्टी तालाब की

तालाब ठाकुर का.....

कुआं ठाकुर का

पानी ठाकुर का

खेत-खलिहान ठाकुर के

गली-मुहल्ले ठाकुर के

फिर अपना क्या

गांव?

शहर ?

देश ?''[12]

आगे ओमप्रकाश वाल्मीकि जी दलितों पर हो रहे शोषण एवं उत्पीड़न को देख कर अपने मन में उठने वाले ज्वार को 'ज्वालामुखी' नामक कविता माध्यम से व्यक्त करते हुए अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति देते हुए कह रहें है कि--

''सदियों से पीड़ित,

दलित

मेरा ह्रदय बन गया है-

ज्वालामुखी

फट पड़ने को लालायित

भीतर ही भीतर

मुझे हिला रहा है ।''[13]

उनके ह्रदय में शोषित दलितों के मध्य से एक आग की ज्वाला उठने की उम्मीद जाग रही है । जो दबे कुचले लागों की आवाज बनकर उनके लिए नई रोशनी की किरण लायेगा ओमप्रकाश वाल्मीकि जी के शब्दों में--

''और, मैं

शहर के बीचों-बीच

उलटा-लटका हूं जमूरे की तरह

इस उम्मीद में

कि भीड़ से कोई एक बाहर आयेगा

और सूर्य की तेज रोशनी

मशाल की तरह जलाकर

अंधेरे के उत्सव का

पटाक्षेप कर देगा ।''[14]

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी द्वारा समाज से बहिष्कृत कर दिये गये दलितों के पूर्वजांे की मनोदशा का वर्णन किया है किस प्रकार समाज से बहिष्कृत अपना जीवन यापन करते थे । अपने यौवनास्था में वो दर-दर की ठोकर खाते फिरते थे । वाल्मीकि जी के अनुसार-

''बस्तियों से खदेड़े गये

ओ, मेरे पुरखो

तुम चुप रहे उन रातों में

जब तुम्हें प्रेम करना था

आलिंगन में बांधकर,

अपनी पत्नियों को ।

तुम तलाशते रहे

मुट्ठी भर चावल

सपने गिरवी रखकर ।''[15]

समाज में फैली छुआ-छूत की नीति के विरोध में ओमप्रकाश वाल्मीकि जी ने समाज में व्याप्त पूर्वाग्रह और उस पूर्वाग्रह के कारण दलितों के साथ होने वाली अत्याचारों के कारण उनकी मनोदशा पर पड़ने वाले प्रभाव को वर्णन निम्न पक्तियों के माध्यम से किया है -

'' चाहे संकीर्ण कहो या पूर्वाग्रही,

मैं जिस टीस को बरसों बरस

सहता रहा हूं

अपनी त्वचा पर

सुई की चुभन जैसे,

उसका स्वाद एक बार चखकर देखो

हिल जायेगा पांव तले जमीन का टुकड़ा ।''[16]

उन्हें अपने काव्य संग्रह ''बस्स ! बहुत हो चुका'' में सग्रहीत 'घृणा और प्रेम कहां से शुरू होते हैं ?' कविता मे माध्यम से उच्च वर्ग के लागों द्वारा निम्न वर्ग के लोगों पर किये गये अत्याचारों की याद करते हुए उनकी मनोदशा का वर्णन इस प्रकार किया है -

'' याद करों,

उस मां का चेहरा

जिसका बेटा सरेआम पीटा गया

निर्ममता से

जिसने चाहा था करना दोस्ती

जगंल के फूलों

और नदी की लहरों से ।''[17]

उन्होनें अपने काव्य सग्रह ''अब और नहीं.....'' में संग्रहित 'अस्थि-विसर्जन' नामक कविता के माध्यम से रूढ़िवादी परम्पराओं एवं पंडितों के पाखण्ड का विरोध करते हुए कहते है कि-

''इसलिए तय कर लिया मैंने

नहीं नहाऊंगा ऐसी किसी गंगा में

जहां पंडे की गिद्ध-नजरें गड़ी हो

अस्थियों के बीच रखे सिक्कों

और दक्षिणा के रूपयों पर

विसर्जन से पहले ही

झपट्टा मारने के लिए बाज की तरह ।''[18]

हिन्दी दलित कविता की विकास-यात्रा में ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताओं का एक विशिष्ट स्थान है । दलित कवि का मानवीय दृष्टिकोण ही दलित कविता का सामाजिकता से जोड़ता है । वाल्मीकि जी ने अपनी दलित कविताओं में मानवीय पक्ष को प्रभावशाली ढ़ग से जोड़ता है ।

आधुनिक दलित साहित्य मराठी साहित्य से जन्मा है । मराठी साहित्य से ही ये दक्षिण से होते हुए ये हिन्दी साहित्य का अभिन्न अंग बनता जा रहा है । जिसका प्रभाव सभी जगह दिखायी देता है । हिन्दी साहित्य का इतिहास देखने में स्पष्ट हो जाता है कि दलित कविता की धारा प्राचीन काल से ही प्रतिक्रिया के रूप में सिद्ध और नाथों द्वारा ही जन्म दिया गया है । जिसने निरन्तर इस वर्ण व्यवस्था का विरोध किया है । आग चलकर दलित साहित्यकारों ने दलितों पर रचनाएं तो की है पर इनमें गहराई से अभिव्यक्त नहीं है ।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताओं में समाज की विसंगतिपूर्ण स्थिति का बहुत ही सही ढ़ग से चित्रण हुआ है । इनकी कविताएं सामाजिक परिवर्तन की मांग करती है । जो दलित मूक्ति के सवालों पर पूर्ण रूप से अम्बेडकरवादी है । सामाजिक क्षेत्र सें उनका पूर्ण रूप से सारोकार है । दलितों के साथ सवर्णों की स्थिति बहुत ही खराब रही है । उनकी नीतियों, कुटिलताओं,दलित स्वर्ण आपसी संबंधों का कवि ने उकेरा है । दलित महिलाओं की स्थिति समाज में दोहरे शोषण की रही है । जिसे घर और बाहर दोनों स्थितियों में परेशानी उठानी पड़ती है । अन्याय और तिरस्कार सहकर भी उन को अपमान सहना पड़ता है । इसलिए इन दलितों के यथार्थ जीवन का व्यक्त करने वाली भाषा का प्रयोग किया गया है। जो उनके मध्य बोले जाने वाली भाषा होती है । दलितों ने जो जीवन जीया है उस परिवेश की भाषा को कवि ने स्वीकार किया है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1- अभिनव हिन्दी कोश, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली,वर्ष 2010 पृ0 311 .

2- टाकभौरे सुशीला,''तुम्हें बदलना ही होगा....'',सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली, वर्ष 2017 पृ010 .

3- कर्दम जयप्रकाश,''दलित वार्षिकी'', सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली, वर्ष 2015,पृ 10 .

4- मीनू रजतरानी,''हिन्दी दलित साहित्य का समाजशास्त्र'', अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा0 लि0 नई दिल्ली, पृ022 .

5- नैमिशरय मोहनदास,''हिन्दी दलित साहित्य'',साहित्य अकादमी नई दिल्ली, वर्ष 2014, पृ0250 .

6- धर्मवीर,''दलित चिंतन का विकास'',वाणी प्रकाशन दिल्ली, वर्ष 2004, पृ021.

7- भारती कंवल, ''दलित साहित्य और विर्मश के आलोचक'',स्वराज प्रकाशन नई दिल्ली,वर्ष 2009, पृ016 .

8- सिंह एन. ,''दलित साहित्य के प्रतिमान'', वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, वर्ष 2014, पृ0 69 .

9- वाल्मीकि ओमप्रकाश,''दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र'' राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली वर्ष 2001, पृ014 .

10-लिंबाले कुमार शरण,''दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र''लोकचेतना प्रकाशन ग्वालियर ,वर्ष 2016, पृ042 .

11- ठाकुर हरिनारायण,''दलित साहित्य का समाजशास्त्र'', भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, वर्ष 2014, पृ058 .

12- वाल्मीकि ओमप्रकाश,''सदियों का संताप'',गौतम बुक सेन्टर दिल्ली,वर्ष 1989,पृ0 13 .

13-वहीं,पृ0 17 .

14-वहीं,पृ0 23 .

15-वाल्मीकि ओमप्रकाश,''बस्स ! बहुत हो चुका'',वाणी प्रकाशन नई दिल्ली,वर्ष 1997,पृ0 14-15 .

16- वही, पृ0 30 .

17-वहीं, पृ0 42 .

18- वाल्मीकि ओमप्रकाश,'' अब और नहीं.....'',राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, वर्ष 2009, पृ0 12 .

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation